चतुर्थ सेमेस्टर, हिन्दी (एम.ए.)

कथेतर गद्य – E.C. 2

मजदूरी और प्रेम निबंध का सारांश

'मजदूरी और प्रेम' सरदार पूर्ण सिंह (जन्म 17.02.1881 ई०) का भाव प्रधान निबंधन है। द्विवेदी युग के श्रेष्ट निबंधकार पूर्ण सिंह माने जाते हैं। इनका यह निबंध मार्क्सवादी विचार धारा से प्रभावित है। किसान जीवन से आरम्भ होकर यह निबंध मजदूरी और मशीन के द्वन्द्व को उजागर करता है। मशीनी व्यवस्था में मजदूरी को आदर नहीं मिलता है। इसी को लेकर निबंधकार चिंतित है। उनकी यह चिंता वर्तमान समय में और भी प्रासंगिक हो गई है।

'मजदूरी और प्रेम' निबंध को लेखक ने विभिन्न भागों में विभाजित किया है। जो इस प्रकार है–

हल चलाने वाले का जीवन

गड़रिये का जीवन

मजदूर की मजदूरी

मजदूरी और कला

मजदूरी और फकीरी

समाज का पालन करने वाली दूध की धारा

पश्चिमी सभ्यता का एक नया आदर्श

इस निबंध में सर्वप्रथम लेखक ने "हल चलाने वाले किसान का जीवन" को प्रस्तुत करते हुए उसे स्वभाव से साधु त्यागी एवं तपस्वी बतलाया है। खेत उसकी यज्ञशाला है और वह अपने जीवन को तपाते हुए अपनी मेहनत के कर्णों को ही फसल के रूप में उगाता है।

इस निबंध में लेखक ने समाज के एक ऐसे वर्ग को चित्रित किया है जिसकी अवहेलना की जाती है। जबकि किसान अन्न पैदा करने में ब्रह्म के समान है। अन्न तथा फलों में उसका ही श्रम दिखाई पड़ता है। किसान दया, परोपकार का प्रतीक है हुआ करता था कभी मगर आज वह आत्महत्या करने को मजबूर है।

लेखक ने :गड़ेरिये का जीवन' का जो चित्र प्रस्तुत किया है वह पवित्र प्राकृतिक जीवन को दर्शाता है। गड़रिये की पत्नी, दो जवान बेटी और अपनी भेड़ों के सहारे बेनाम जिंदगी जीता है। इनका जीवन बर्फ की पवित्रता से पूर्ण और वन की सुगंधि से सुगंधित है। गड़ेरिये के जीवन को उजागर करते हुए लेखक समाज से सवाल करता है–"पंडितों की ऊटपटाँग बातों से मेरा जी उकता गया है। प्रकृति की मंद–मंद हँसी में ये अनपढ़ लोग ईश्वर के हँसते हुए ओंठ देख रहे हैं। पशुओं के अज्ञान में गंभीर ज्ञान छिपा हुआ है। इन लोगों के जीवन में अद्भुत आत्मानुभव भरा हुआ है। गड़रिये के परिवार की प्रेम–मजदूरी का मूल्या कौन दे सकता है।"

लेखक ने "मजदूर की मजदूरी" का उल्लेख करते हुए स्पष्ट किया गया है कि जो मजदूर कठिन परिश्रम करके सारे दिन काम करता है, उसे हम उसके परिश्रम के अनुकूल मजदूरी नहीं देते। मजदूरी का कोई मोल नहीं होता। मजदूरी का ऋण धन लेकर नहीं चुकता है। यह "ऋण तो परस्पर की प्रेम–सेवा से चुकता होता है। लेखक ने एक विधवा की मजदूरी की तुलना करते हुए कहा है–"ऐसी मजदूरी और ऐसा काम–प्रार्थना, संध्या और नमाज से क्या कम है?"

"प्रेम–मजदूरी" के संबंध में लेखक का मत है कि–"मनुष्य के हाथ से बने हुए कामों में उनकी प्रेममय पवित्र आत्मा की सुगंध आती है।" जैसे अपनी प्रियतमा के हाथों से बने हुए रूखे–सूखे भोजन में जो रस है वह किसी होटल में बने हुए भोजने में नहीं हो सकता। जो कर्म है, मेहनत है वही प्रेम है। ऐसा लेखक का मानना है। वे कहते भी हैं–"मेरे गुरू ने इसी प्रेम से संयम करने का नाम योग रखा है। मेरा यही योग है।"

"मजदूरी और कला" का निरूपण करते हुए लेखक ने मशीनों के प्रयोग की भर्त्सना की है और उन्हें मजदूर की मजदूरी छीनने वाली बताया है। लेखक मशीनों के स्थान पर मजदूरी के हाथ से होने वाले काम को महत्व देता है। क्योंकि मशीने निकम्मा और अकर्मण्य बना देती है। हाथ से काम करने से मनुष्य सदैव परिश्रमी और पवित्र रहता है। मशीनी सभ्यता में निकम्मे रहकर मनुष्यों की चिंतन–शक्ति थक गई है। कवि के संबंध में लेखक कहता है कि बिना मेहनत से लिखी गई–"आजकल की कविता में

नयापन नहीं। उसमें पुराने जमाने की कविता की पुनरावृत्ति मात्र है। इस नकल में असल की पवित्रता और कुँवारेपन का अभाव है।" 'कला' के संबंध में निबंधकार का अनुमान है कि–"मजदूरों की मजदूरी ही यथार्थ पूजा होगी। कलारूपी धर्म की तभी वृद्धि होगी। तभी नये कवि पैदा होंगे। परंतु ये सब के सब मजदूरी के दूध से पलेंगे।" अतः कहा जा सकता है निबंधकार ने "मजदूरी और प्रेम" निबंध में श्रम की महत्ता प्रतिपादित की है। मजदूरी के दूध से पलने का अर्थ कठिन परिश्रम से है।

"मजदूरी और फकीरी" का वर्णन करते हुए लेखक ने मजदूरी और फकीरी को मानव के विकास के लिए आवश्यक माना है। बिना परिश्रमी के फकीरी व्यर्थ है और कुछ शिथिल पड़ जाती है। मजदूरी को लेखक ने जीवन यात्रा का आध्यात्मिक नियम माना है–"जोन ऑव आर्क की फकेरी और भेड़ें चराना, टाल्सटाय का त्याग और जूतें गाँठना, उमर खैयाम का प्रसन्नतापूर्वक तंबू सीते फिरना ब्रह्मज्ञानी कबीर और रैदास का शुद्ध होना, गुरू नानक और भगवान श्रीकृष्ण का कूक पशुओं को लाठी लेकर हाँकना–सच्ची फकोरी का अनमोल भूषण है।" स्पष्ट है कि किसी को भी भीख माँग कर नहीं खाना चाहिए, अपितु परिश्रम करके जीवन यापन करना चाहिए।

"समाज का पालन करने वाली दूध की धारा" का वर्णन करते हुए लेखक ने कहा है कि परिश्रम एवं हाथ से काम करने से हृदय पवित्र होता है। सच्चा आनंद मिलता है। अन्न पैदा करना तथा हाथ की कारीगरी और

मेहनत को मशीनी सभ्यता में आदर नहीं होता है वहाँ के देवस्थानों में स्थापित मूर्तियाँ देखकर लेखक को–"अपने देश की आध्यात्मिक दुर्दशा पर लज्जा आती है।" जब हमारे यहाँ के मजदूर भूखे मरते हैं तब हमारे मंदिरों की मूर्ति कैसे सुंदर हो सकती हैं? आज भी हमारे देश की यही हालात है। सबसे ज्यादा युवा बेरोजगार जहाँ हो, वहाँ युवाओं को रोजगार देने के बजाय मंदिर निर्माण कार्य ज्यादा जरूरी हो गया है।

"पश्चिम सभ्यता का एक नया आदर्श" के अन्तर्गत लेखक यही सलाह देता है कि जड़ मशीनों की पूजा छोड़कर सचेतन मजदूरी को गले लगाना चाहिए। मशीनों के कारण पूंजिपति मजबूत हुआ है और मजदूर दरिद्र हुआ है। अब हमलोगों को मशीन की अपेक्षा मजदूरी को महत्व देना होगा, तभी मानव का कल्याण होगा और समाज समृद्ध खुशहाल होगा। मशीनी सभ्यता मनुष्य को नष्ट कर देगी। नयी सभ्यता श्रमिकों के श्रम से ही फलेगी फूलेगी।

प्रस्तुतकर्ता
डॉ० कंचन कुमारी
अतिथि शिक्षक
हिन्दी विभाग,
पटना विश्वविद्यालय, पटना
E-mail Id : kanchanraycool@gmail.com